लैटिन अमेरिका में, मैंने देखी अध्यात्म के प्रति अनोखी ललक

• ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश, आबू पर्वत

अगस्त-सितम्बर 2008 में डेढ़ मास की यात्रा पर मेरा ईश्वरीय सेवार्थ लैटिन अमेरिकी देशों (ब्राजील, अर्जेंटीना, कोलम्बिया, चिली, पेरू, पेराग्वे और वेनेजुएला) में जाना हुआ। मेरी यात्रा के दौरान अनेक पब्लिक कार्यक्रम, स्नेह-मिलन, संगोष्ठियाँ व साक्षात्कार आदि आयोजित किये गये जिनसे अनेक आत्माओं को लाभ मिला। योगभट्ठी, प्रश्नोत्तर, कर्मयोग, डायलॉग आदि कार्यक्रमों में बी.के. भाई-बहनों ने रुचि से भाग लिया। ये देश भारत से सबसे दूर हैं लेकिन उन भाई-बहनों की लगन और ललक देखकर लगता है कि वे बाबा के सबसे निकट हैं। लैटिन अमेरिकी लोग आध्यात्मिकता के प्रति दीवाने हैं और भारतीय दर्शन तथा संस्कृति के कायल हैं। हरेक देश की अपनी महत्ता देखने को मिली तथा प्रत्येक जगह से कुछ-न-कुछ नया सीखने को भी मिला।

हमारे सभी कार्यक्रमों में प्रश्न-उत्तर कार्यक्रम भी अवश्य होता था जिसमें क्या भाई, क्या बहनें, क्या कर्मचारी, क्या युवा सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और विभिन्न विषयों पर सवाल-जवाब हुए। प्रश्नोत्तर का सारांश प्रस्तुत है—

प्रश्नः- ब्राजील में एक युवा भाई ने प्रश्न किया कि आज के भागम-भाग जीवन में क्या मन की शांति सम्भव है?

उत्तरः- वास्तविकता यह है कि काम करने और दौड़-भाग करने से हमारी जिंदगी में अशांति नहीं आती अपितु नकारात्मक विचारों से ऐसा होता है। काम करते, लोगों से मिलते आदि-आदि समय यदि हमारा चिंतन सकारात्मक हो जाये तो मन को सच्ची शांति प्राप्त हो जाती है। हमारे शरीर की प्राकृतिक संरचना के अनुसार दिमाग ठंडा और दिल में गर्मजोशी होनी चाहिए लेकिन भौतिकता और बाह्यमुखता में आने के कारण हमने इसे एकदम उलट दिया है। आज हमारा दिमाग सदैव गर्म रहता है। हम छोटी-छोटी बातों में लाल-पीले हो जाते हैं और दिल ठंडा हो गया है। काम करने में उमंग-उत्साह नहीं रहा है। राजयोग चिंतन की धारा को सकारात्मक कर देता है। योग का प्रतिदिन का अभ्यास न केवल मन को शांति प्रदान करता है अपितु कार्यक्षमता और कार्यदक्षता को भी बढ़ाता है।

प्रश्नः- अर्जेंटीना में एक उद्यमी ने पूछा कि व्यापार में सफलता की कुंजी क्या है?

उत्तरः- आज जीवन में तनाव बढ़ रहा है जिससे व्यक्तियों की कार्यक्षमता प्रभावित हो रही है फलस्वरूप व्यापार में घाटा हो रहा है। इससे बचने के लिए निर्णय शक्ति को बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि हम सही समय पर सही निर्णय ले सकें। विश्व भर के बहुत सारे उद्यमी ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े हुए हैं जिन्होंने योगी जीवन अपनाने के बाद सफलता के नये आयाम स्थापित किए हैं और कारोबार को आगे बढ़ाया है। मन में जितने व्यर्थ और नकारात्मक विचार कम आते हैं उतना ही उसकी क्रियाशीलता बढ़ती जाती है। कोई आदमी सारे दिन दौड़ता रहे तो थक जाता है। ठीक इसी प्रकार मन बुरे विचारों में रमण करने के कारण थक जाता है और बुद्धि पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता है परिणामस्वरूप निर्णय क्षमता ठीक से काम नहीं कर पाती है। चिंतन जितना श्रेष्ठ होगा हम अपने कार्य व्यवहार में उतने ही अधिक सफल होंगे।

प्रश्नः- कोलम्बिया में एक गृहणी ने सवाल किया, बच्चों का अच्छा भविष्य बनाने की कोई युक्ति बताएं?

उत्तरः- बच्चों को अति प्यार करें तो बिगड़ जाते हैं और डाँटें-डपटें तो ढीठ हो जाते हैं। बच्चों को आदर्श बनाने

के लिए अभिभावकों को उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करना होगा। माता-पिता जो भी करते हैं बच्चे उसकी नकल करते हैं। यदि अभिभावक उँचे आदर्श प्रस्तुत करें तो बच्चे स्वत: ठीक हो जायेंगे। दूसरे शब्दों में बच्चों को सुधारने की बजाय यदि हम स्वयं सुधर जाएं तो सब ठीक हो जायेगा। बच्चों से हम जो अपेक्षा रखते हैं पहले हमें वैसे करना होगा। बच्चों के लिए समय भी निकालना होगा और अच्छा साहित्य पढ़ने, अच्छे बच्चों का संग करने और सकारात्मक सोच रखने की शिक्षा भी देनी होगी।

प्रश्न:- पेरु में एक वृद्ध व्यक्ति ने जानना चाहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था बुजुर्गों के लिए क्या करती है?

उत्तर:- दुनिया में व्यक्ति जितना वृद्ध होता जाता है उसकी वैल्यू कम होती जाती है जबकि अध्यात्म में इसका एकदम उल्टा है। हमारे विश्व विद्यालय में शरीर से वृद्ध हो जाने के बाद भी सोच संरचनात्मक और सकारात्मक रहती है। बुजुर्ग लोग विश्व विद्यालय के निर्माणकारी कार्यों से जुड़ जाते हैं। उनकी दिनचर्या सैट हो जाती है और उनके पास हर काम के लिए समय होता है। स्वामी विवेकानंद ने एक बार कहा था कि उन्होंने अपने जीवन में अस्सी वर्ष के

कोलम्बिया (बोगोटा)–ब्र.कु.आत्म प्रकाश ''**राजयोग द्वारा सम्बन्धों में सुधार**'' विषय पर प्रवचन के बाद ब्र.कु.मारशेलो भाई तथा अन्य के साथ समूह चित्र में।

युवा और अट्ठारह वर्ष के वृद्ध देखे हैं। इसका भाव स्पष्ट है कि यदि चिंतन में जोशो-खरोश और नवीनता हो तो वृद्धावस्था को भी सफल किया जा सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ विश्व विद्यालय को ज्वाइन करने के बाद व्यक्तियों के सोचने का तरीका बदल जाता है और बुजुर्ग लोग भी अपने को कुछ करने में समर्थ पाते हैं।

प्रश्न:- चिली में विश्व विद्यालय के प्रोफेसर ने प्रश्न किया कि विद्यार्थियों में व्याप्त अराजकता और उद्दंडता को कैसे रोकें?

उत्तर:- ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से लगभग एक लाख युवा जुड़े हुए हैं जिनमें से कोई भी मद्यपान-धूम्रपान आदि नहीं करता है। बी.के.युवाओं की ऊर्जा विध्वंसक कार्यों की बजाय निर्माणकारी कार्यों में लगती है। आज विद्यार्थियों के भटकाव का सबसे बड़ा कारण उनके सामने किसी रोल मॉडल (आदर्श) का न होना है। घर में माता-पिता और कॉलेज में प्राध्यापक यदि अपने व्यवहारिक जीवन के द्वारा विद्यार्थियों का निर्देशन करें तो कोई कारण नहीं कि युवा सही रास्ते पर न चलें। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा ने आरम्भ काल में सभी भाई-बहनों से हर प्रकार के कार्य कराये। पारिवारिक स्थिति के आधार पर नहीं अपितु योग्यता के आधार पर उन्हें जिम्मेवारियाँ सौंपी। फलस्वरूप ब्रह्माकुमारीज़ का प्रबंधन आज विश्व भर में चर्चा का विषय बना हुआ है। लोग इस विषय पर शोध कर रहे हैं। युवाकाल जीवन का स्वर्णकाल होता है। यदि युवा को ठीक रास्ता बताने वाला मिल जाए तो वह स्वयं ही बुरी प्रवृत्तियों को त्याग देता है।

❖